संपादकीय

10.5005/jras-4-1-v

COVID-19 महामारी के मद्देनजर आयुर्वेद के माध्यम से लोक-केंद्रित स्वास्थ्य दृष्टिकोण

नव कोरोना वायरस, चीन के वुहान में उभरकर, 1.6 करोड़ से अधिक संक्रमित मामले और दुनिया भर के 213 देशों और क्षेत्रों में 6 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु के साथ महामारी के स्तर तक पहुँचने में सफल रहा है। इस महामारी को फैलने से रोकने के लिए दुनिया भर में किये जा रहे समन्वित प्रयासों के बावजूद, इसने इस तरह के स्वास्थ्य-आपात-स्थितियों से निपटने में कमियों को तथा इस तरह के महामारियों की भविष्यवाणी या उन्हें नियंत्रित करने में वैश्विक अक्षमता को उजागर कर दिया है। वैश्विक महामारी के खतरों से निपटने की वर्तमान रणनीति मुख्य रूप से आपातकालीन प्रतिक्रिया पर केंद्रित है जिसमें आपातकालीन पृथक्करण और संसर्गरोध व्यवस्थाएं, रोग-प्रदुर्भावों का मानचित्रण, संपर्क-कड़ी अनुसन्धान, एहतियाती उपाय, निगरानी आदि शामिल हैं। COVID-19 महामारी के खिलाफ शुरु की गई मुहिम काफी हद तक मात्र प्रतिक्रियात्मक ही रही है और पारदर्शी रोकथाम उपायों को स्थापित करने में असमर्थता, आत्म-विचलन और अलगाव के लिए सामुदायिक सहभागिता की कमी आदि ने स्वास्थ्य प्रणाली की कमजोरियों को इंगित किया है।

किसी भी महामारी या महामारी के प्रकोप के केंद्र में सामान्य जन होते हैं इसलिए जनसामान्य का सशक्तिकरण ऐसे प्रकोपों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। पिछली कुछ शताब्दियों में अनेकों अर्थव्यवस्थाओं को उखाड़ने की क्षमता वाले ऐसे कई प्रकोप देखे गए हैं। विश्व में अपरिहार्य जीवन और आर्थिक नुकसान में सक्षम ऐसी महामारियों के पुनरुद्भव की संभावना बनी ही रहती है। ऐसे परिदृश्य में, एक व्यक्ति-केंद्रित स्वास्थ्य दृष्टिकोण की आवश्यकता है जहां संसर्गपूर्व व्याधिप्रतिबंधक उपाय (प्री-एक्सपोजर प्रोफिलैक्सिस) शामिल हो जिसमें व्यक्ति के स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाये रखने पर जोर दिया जाए ताकि आने वाले महामारियों की संहारकता या दुष्प्रभाव को सीमित रखा जा सके।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की COVID-19 रणनीतिक तैयारियों और प्रतिक्रिया योजना में पारंपरिक चिकित्सा को शामिल करने की सिफारिश की गई है। चीन में भी, COVID-19 के महामारी की शुरुआत से ही पारंपरिक चिकित्सा को रोगप्रतिबंध तथा चिकित्सा के लिए उपयोग किया जा रहा है।

आयुर्वेदिक ग्रन्थों में जनपदोध्वंस विकार (महामारी) के तहत महामारियों के प्रसार का विज्ञान व्यक्त करते हुए पूरा अध्याय समर्पित है जिसमें इस तरह की महामारियों को उद्भव एवं प्रसार के लिए कारणभूत शारीरिक एवं पर्यावरणीय कारकों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। कोई व्याधि जो किसी बाहरी कारण से उत्पन्न होती है उसका वर्गीकरण आगन्तुज विकार के रूप में किया गया है, जिसकी अपनी विशिष्ट हेतु, संप्राप्ति, दोष संलग्नता तथा चिकित्सकीय अभिव्यक्ति होती है। किसी भी बीमारी की संक्रामकता और व्याधिबल या रोग की गति व्यक्ति के निहित बल (शक्ति/प्रतिरक्षा) पर निर्भर है। एक मजबूत और स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली सुनिश्चित करती है कि एक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से कई बीमारियों से सुरक्षित रहे तथा व्याधि से प्रभावित होने पर भी न्यूनतम कष्टता तथा अपेक्षाकृत सरलता से पुनः स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति करे। आयुर्वेद में विभिन्न निवारक, उपचारात्मक, कायाकल्प, व्यवहार और आध्यात्मिक हस्तक्षेप से लैस एक विस्तृत आयुध है जो यह सुनिश्चित करता है कि शरीर को स्वास्थ्य के सबसे इष्टतम स्थिति में बनाए रखा जाए।

आयुर्वेद के विभिन्न ग्रंथों में "रसायन" शीर्षक के अंतर्गत शरीर के प्रतिरोध को बढ़ाने के लिए आहार, आचार, जड़ी-बूटियों, औषधियोगों और चिकित्सा उपक्रमो के एक समूह की अवधारणा करते हैं। आयुर्वेद की रसायन जड़ी बूटियां अपने सालुटोजेनेसिस (प्रतिरक्षा संवर्धक/परिवर्तक प्रक्रिया) और प्रत्यक्ष विषाणु नाशक प्रभाव के बहुस्तरीय दृष्टिकोण के कारण निश्चित रूप से भविष्य के ऐसे संक्रमणों, जो कि महामारी के रूप में उभरने में सक्षम हैं के प्रति उचित व्यूहरचना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

COVID-19 के वर्तमान परिदृश्य में केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद ने देश भर में प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ मिलकर विभिन्न आयुर्वेद चिकित्साओं की रोगनिरोधी और उपचारात्मक क्षमता पर साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए विभिन्न नैदानिक शोध-परीक्षणों की शुरुआत की है। इस सन्दर्भ में आयुष 64 जो कि परिषद द्वारा विकसित की गई एक आयुर्वेदिक कोडेड औषधि है, तथा इंफ़्लुएंजा जैसे व्याधियों में जिसकी प्रभावकारिता पूर्वस्थापित है, उसके आधार पर इसका प्रयोग COVID-19 का प्रबंधन करने के लिए किया जा रहा है। देश भर में इसी तरह की चिकित्सकीय अनुसंधान गतिविधियाँ की जा रही हैं और कई राज्यों ने COVID-19 के खिलाफ संघर्ष में सार्वजनिक स्वास्थ्य वितरण प्रणालियों में भी आयुष प्रणालियों को सम्मिलित किया है।

COVID-19 का उपचार खोजने के लिए आयुर्वेद से संभावित दिशानिर्देशों (लीड) का उपयोग आगे बढ़ने के लिए किया जा सकता है, जो COVID-19 महामारी की दवा की खोज के अध्ययन में लगने वाली कालावधि को कम करने में मदद करेगा। आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा और मौलिक जीव विज्ञान का एकत्र संगठन पारंपरिक ज्ञान के उपयोग से नए, सुरक्षित, लागत प्रभावी और प्रभावी उपचारों के लिए उपयुक्त खोज इंजन के लिए एक मंच प्रदान कर सकता है और समय की आवश्यकता भी है कि औषधीय जड़ी बूटियों का आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों के अनुरूप अधिकाधिक उपयोग किया जाए।

प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान
मुख्य सम्पादक
आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान पत्रिका
महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली, भारत

10.5005/jras-4-1-vi

People-centric Health Approach through Ayurveda in the Wake of COVID-19 Pandemic

The novel coronavirus disease-2019 (COVID-19), which emerged from an epicenter in Wuhan, China, has reached pandemic proportions with over 16 million positive cases and death toll at over 6 lakhs across 213 countries and territories across the world. Despite worldwide coordinated efforts to contain the pandemic spread, it has managed to point out the poignant vulnerabilities in handling such health emergencies and the global ineptitude in predicting or limiting such outbreaks. Current strategy in handling global pandemic threats is mainly concentrated on mounting emergency response involving setting up emergency isolation and quarantine facilities, incidence mapping, contact tracing, precautionary measures, surveillance etc. The response mounted against COVID-19 pandemic has been largely reactive and the inability to mount transparent containment measures, lack of community engagement for self-deferral and isolation etc has pointed out the vulnerabilities in the health system.

People are at the center of any pandemic or epidemic outbreak and empowerment of the population is pivotal to contain such outbreaks. The last few centuries has seen many such outbreaks with the ability to crumble many an economy. The world would again go through such pandemics or epidemics with inevitable loss of life and economic repercussions. In this scenario, a people-centric health approach where preexposure prophylaxis including measures for maintenance of optimal health status is actively applied to prevent the onslaught or at least limit the impact of incoming pandemics should be considered.

Traditional Medicine has been recommended to be included in the WHO COVID-19 strategic preparedness and response plan. In China, Traditional Medicine has been deployed from the onset of pandemic for use against COVID-19 in prophylactic and therapeutic capacities.

Ayurvedic classics has devoted entire chapters to impart the knowledge on the spread of epidemics under the *Janapadodhwamsa Vikara* (epidemics) and delineated the various host and environmental factors which would enable the spread of such diseases. Any disease that originates from an external cause is categorized as *Agantuja Vikara* (exogenous morbidities), which would have its own unique etiology, pathogenesis, *Doshic* (system biology) involvement and clinical manifestations. The contagiousness and the extent of virulence or prognosis of any disease is dependent on the inherent *Bala* (strength/immunity) of the individual. A robust and hale immune system ensures that an individual is naturally protected against many diseases and would also guarantee a better prognosis and easy recovery once affected. Ayurveda has a wide armamentarium equipped with various preventive, therapeutic, rejuvenative, behavioural and spiritual interventions that would ensure that the body is maintained at the most optimal state of health.

Various Materia Medica of Ayurveda conceptualize a group of herbs, formulations and therapies for enhancing body resistance under the comprehend term "*Rasayana*". *Rasayana* herbs of Ayurveda with a multipronged approach of salutogenesis (by immune enhancing/modulating activities) and direct antiviral effect may certainly play a pivotal role in future approaches toward such viral infections that are capable of emerging as pandemics.

The Central Council for Research in Ayurvedic Sciences (CCRAS) has initiated various clinical trials across the country in collaboration with reputed Institutes to generate evidence on the prophylactic and therapeutic potential of various Ayurveda interventions in the COVID-19 scenario. In this regard, AYUSH 64, an Ayurvedic Coded drug developed by CCRAS has been repurposed to manage COVID-19, based on its efficacy in Influenza like Illness (ILI). Similar Clinical Research activities are being undertaken across the country and many states have actively amalgamated AYUSH systems into the public health delivery systems to better equip the public to combat against COVID.

Potential leads from Ayurveda can be used to proceed further in the quest to find a cure to COVID-19, which will help in reducing time in drug discovery study in this pandemic time for COVID-19. A consortium of Ayurveda, modern medicine and basic biology can provide a platform for real discovery engine from Traditional wisdom to newer, safer, cost effective and effective therapies which is a need of the hour stating that medicinal herbs be utilized to the greatest extent with incorporation of fundamentals of Ayurveda.

Prof. Vaidya Kartar Singh Dhiman
Editor-in-Chief
Journal of Research in Ayurvedic Sciences

Director General
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences
Ministry of AYUSH, Government of India
New Delhi, India